International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 23-03-2020; Accepted: 21-04-2020; Published: 27-04-2020
www.educationjournal.org
Volume 5; Issue 2; 2020; Page No. 23-26

विद्यालयी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

डॉ0 अशोक कुमार
परीक्षा नियंत्रक, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ झारखंड, भारत

सारांश
शिक्षक वह धुरी है जिसके चारो ओर सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली चक्कर लगाती है। समाज में अध्यापक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्परायें और तकनीक कौशल पहुचाने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्वलित करने में सहायता देता है। एक सच्चा अध्यापक जीवन पर्यंत विद्यार्थी बना रहता है। शिक्षा की प्रक्रिया में अध्यापक एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी हैं और वस्तुतः वहीं हमारी संस्कृति के भविष्य का संरक्षक है। छात्र के अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाने वाला एक ज्ञानरूपी प्रकाश दिखाकर मानवता के पथ को आलौकित करने वाला कहा जाता है। कोठारी कमीशन ने भी अध्यापक को राष्ट निर्माता की संज्ञा दी है। आशय यह है की शिक्षक सामान्य सामाजिक व्यक्ति से अधिक चरित्रवान, उदार, सहिष्णु तथा मर्यादित होता है। विद्यालय में पर्याप्त संख्या में विभिन्न दक्ष एवम सुयोग शिक्षक का होना एक अनिवार्य आवश्यकता है। शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता अध्यापक के व्यवहार, योग्यताओं एवं कार्यप्रणली पर ही निर्भर करती है। वर्तमान समय में शिक्षक छात्र अनुक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। चूंकि शिक्षा का तात्पर्य बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास से हैं जिसके अन्तगर्त अध्यापक का कार्य ने केवल बालक का मानसिक विकास करना है वरन उसके शारीरिक, नैतिक सर्वांगीण, आध्यात्मिक विकास में भी योगदान करना है। शिक्षक को विषय का ज्ञान होना चाहिए। छात्रों से सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। और उनकी समस्याओं के लिए निर्देशन भी देना चाहिए।

मुख्य शब्दः विद्यालय, शिक्षा, शिक्षक, भूमिका

प्रस्तावना

विद्यालयः विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहां जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक विकास वांछित दिशा में हो। "विद्यालय" शब्द दो शब्दों विद्या. आलय से मिलकर बना है। आलय का अर्थ है स्थान। अतः विद्या. आलय अर्थात विद्यालय का अर्थ हुआ 'विद्या देने का स्थान'। इस प्रकार जिस स्थान पर शिक्षा प्रदान की जाती है उसे विद्यालय कहते है।

शिक्षाः "शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक मानव की छिपी हुई शक्तियों को विकसित किया जाता हैस, उजागर किया है। उसे नये ज्ञान, कुश्लताओं, मूल्यों, आदर्शों आदि को सिखाया जाता है जिससे कि वह अपने वातावरण पर अधिकार पा सकें, समाज में अपना सही स्थान प्राप्त कर सके और मानव–जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

शिक्षकः– शिक्षक विद्यालय संगठन का हृदय माना जाता है वह शैक्षिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण केन्द्र बिंदु होता हैं। वह राष्ट्र की भावी पीढ़ी का निर्माता होता है। अध्यापक इतिहास का निर्माणकर्ता है। राष्ट्र का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अपने अध्यापकों से भिन्न नहीं हो सकते। अध्यापको का स्थान हमारे देश में ईश्वर से उच्च माना जाता है क्योंकि राष्ट्र एवं समाज की विधमान एवं भावी आवश्यकताओं को पूर्ण करने का महान कार्य अध्यापक द्वारा ही कराया जाता है। विद्यालय की प्रसिद्धी और समाज पर इसका प्रभाव कार्य करने वाले अध्यापक पर ही निर्भर करता है।

भूमिका :– भूमिका प्रत्यय समाजशास्त्र से लिखा गया है, भूमिका में विशिष्ट संबंधो का बोध होता है। प्रबंधन के क्षेत्र में भूमिका प्रत्यय का प्रयोग तब हुआ जब मानवीय संबंधो को व्यवस्था में महत्व दिया जाने लगा। भूमिका शब्द का अर्थ महत्व से भी लगाया जाता है।

शिक्षक का अथ

शि – शिखर तक ले जाने वाला।
क्ष – क्षमा की भावना रखने वाला।
क – कमजोरी दूर करने वाला।

अर्थात, जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है ओर उसकी कमजोरी दूर कर उसको शिखर (सफलता) तक ले जाता है। वही सच्चा शिक्षक कहलाता हैं।

शिक्षक के कार्य :– शिक्षा में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। शिक्षक का कार्य मात्र कक्षा में शिक्षण कार्य करने पर ही समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि छात्रों को उचित निर्देशन प्रदान करना, विद्यार्थीयों की भावनाओं को समझना, विद्यालय में सामाजिक वातावरण का निर्माण करना, विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन करना आदि भी अध्यापक के महत्वपूर्ण कार्य हैं। शिक्षक के निम्नलिखित कार्य एवं उत्तरदायित्व हैं।

1. **शिक्षण :–** शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य शिक्षण का ही होता है। शिक्षक को ईमानदारी, मेहनत और लगन के साथ इस कार्य को करना चाहिए। अध्यापक बालकों में औपचारिक शिक्षा के साथ–साथ अनौपचारिक वह निरोपचारिक शिक्षा भी दे। अध्यापक अपने इस दायित्व का निर्वहन तभी कर सकता है तब उसे अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो।
2. **कुशल प्रबंधक :–** विद्यार्थियों को विषय की उचित शिक्षा प्रदान करने हेतु उसे उपलब्ध संसाधनों का कुशलतम प्रबंध करना होता है एक प्रबंधक के रूप में शिक्षक चार मुख्य कार्य करता है जो निम्न है :–

क) योजना निर्माण :– किसी भी अच्छे शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में जाने से पूर्व विषय वस्तु और अनुदेशन सामग्री को क्रमवार रूप से व्यवस्थित करें इसके लिए वह निम्न

कार्य कर सकता है जैसे–
1. सम्पूर्ण व्यवस्था विश्लेषण।
2. कार्य विश्लेषण।
3. प्रविष्ट व्यवहार का अभिज्ञान।
4. उद्देश्य को सूत्रबद्ध करना।
5. छात्रों की जरूरतों की पहचान करना।
6. परिक्षण सामग्री निर्माण।

ख) व्यवस्था करना :– शिक्षक विद्यालय का अभिन्न अंग होता है। विद्यालय में समस्त क्रियाओं की व्यवस्था और उनका कुशल संचालन केवल प्रधानाध्यापक का ही कर्त्तव्य नहीं है, अपितु विद्यालय का अभिन्न अंग होने के कारण विद्यालय के प्रत्येक कार्य समय सारणी बनाना पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना आदि में प्रधानाध्यापक का पूर्णतः सहगामी होना एवं उनकी सफलता के साथ पूरा करने का अध्यापक का दायित्व है। इस प्रकार विद्यालय में विभिन्न प्रकार की व्यवस्था बनाये रखने का अध्यापक का महत्वपूर्ण कर्तव्य है।
एक प्रभावशाली पर्यावरण का निर्माण करके वह अपने शिक्षण कौशलों का प्रयोग करता है। जिससे वह एक ध्येय पुष्ठ अधिगम अनुभव का सृजन कर सकें।

ग) नैतृत्व करना :– शिक्षक के सम्मुख कक्षा का एक सदस्य होने के साथ–साथ छात्रों को एक नैतृत्व प्रदान करने की चुनौती होती है। अपने नेतृत्व में वह छात्रो में ज्ञान पिपासु प्रविर्तियों का सृजन करता है। वह उनके मन में उत्पन्न आकंठ इच्छाओं को दिशा देता हैं। वह छात्रों के समक्ष पहल करके एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। शिक्षक छात्रो की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के उपाय करता है।

घ) नियंत्रण करना :– किसी भी शिक्षक को सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक नियंत्रक यानि कि कंट्रोलर के रूप में निभानी पड़ती है। अपनर निरिक्षण, प्रेक्षण व् जाँच द्वारा वह एक नियंत्रक की भूमिका का निर्वहन करता है। नियंत्रक के तौर पर वह निम्न कार्य करता है–

1. शिक्षण व्यवस्था का मूल्यांकन करना।
2. अधिगम व्यवस्था का प्रेक्षण करना।
3. शिक्षण व्यवस्था का अवशोधन काना।

3. एक मनोवैज्ञानिक के रूप में :– किसी भी विषय के शिक्षक के सम्मुख कक्षा में महत्वपूर्ण चुनौती यह होती है कि वह एक कक्षा में सभी छात्र एक सामान नहीं होते उनकी मानसिक योग्यता एवं रूचि अलग–अलग होती है, ऐसा व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण होता है। इन व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पहचानने के लिए शिक्षक को मनोवैज्ञानिक होना बहुत जरूरी हैं।

4. अनुदेशक के रूप में :– शिक्षण के दौरान कक्षा में शिक्षक–शिक्षार्थी के बीच में परस्पर अंतर्क्रिया करने की प्रक्रिया को अनुदेशन कहा जाता है। यह सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में काफी महत्वपूर्ण प्रणाली है।

5. अनुसंधानकर्त्ता के रूप में :– विज्ञान में कितने ज्ञान का सर्जन बड़ी तेजी से हो रहा है इसलिए एक विज्ञान शिक्षक की एक शोधकर्त्ता के रूप में बड़ी भूमिका होती है।

6. मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता के रूप में :– एक आदर्श शिक्षक का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व छात्रों को उनकी समस्याओं के समाधान ढूंढ़ने में सहायता करना है। इस तरह से वह एक मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता की भूमिका का निर्वहन करता है।

7. समन्वयक के रूप में :– अध्यापक को एक सामान्य व्यक्ति के रूप में भी कार्य करना पड़ता है। उसे अन्य शिक्षकों और छात्रों, प्रबंधक में छात्रों, अभिभावकों व् विद्यालयों के बीच सम्बन्ध व्यक्ति कार्य करना पड़ता है।

"एक किताब, एक कलम, एक बच्चा, और एक शिक्षक दुनिया बदल सकते हैं।"

एक आदर्श अध्यापक के गुण फनंसपजपमे वि ंद पकमंस जमंबीमत

अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। अध्यापक के बिना शिक्षा की प्रक्रिया सफल रुप से नहीं चल सकती। अध्यापक न केवल छात्रों को शिक्षा प्रदान करके ही अपने दायित्व से मुक्ति पा लेता है वरन उसका उत्तर दायित्व है तो इतना अधिक और महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें पूर्ण करने में समर्थ नहीं है। शिक्षक की क्रिया और व्यवहार का प्रभाव उसके विद्यार्थियों, विद्यालय और समाज पर पड़ता है। इस दृष्टि से कहा जाता है कि अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है। अतः अध्यापक अपने कार्यों को सफलतापूर्वक एवं उचित प्रकार से करने के लिए आवश्यक है कि उसमें कुछ गुण अथवा विशेषताएं होनी चाहिए। सामान्यतः एक अच्छे अध्यापक में निम्नलिखित गुणों का होना अति आवश्यक है–

1. शैक्षिक गुण/योग्यताएं
2. व्यावसायिक गुण
3. व्यक्तित्व संबंधी गुण और
4. संबंध स्थापित करने का गुण

I. शैक्षिक योग्यता educational qualification.

एक अध्यापक में अध्ययन के लिए स्तर अनुसार न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का होना अनिवार्य है। साथ ही अध्यापक का प्रशिक्षित होनी आवश्यक है।

II. व्यावसायिक गुण & Professional Properties.

एक अच्छा अध्यापक बनने के लिए आप में व्यवसायिक गुणों का होना भी आवश्यक है–

1. **व्यवसाय के प्रति रुचि निष्ठा –** एक अध्यापक को अध्यापन व्यवसा में रुचि और उसके प्रति निष्ठा होनी चाहिए। वह उसे केवल अपनी कमाई का साध नही ना समझे। अध्यापक यदि मजबूरी में अध्यापक बनता है तो वास्तव में वह अध्यापक बनने के योग्य नहीं है।

2. **विषय का पूर्ण ज्ञान –** एक कुशल अध्यापक में इस गुण का होना अति आवश्यक है। अध्यापक को विषय का पूर्ण ज्ञान नहीं होगा तो वह विद्यार्थियों की विषय संबंध समस्याओं का समाधन नहीं कर पाएगा जिससे छात्र उसका आदर सम्मान नहीं करेंगे और नही उसे आत्म संतुष्ठि हो पाएगी।

3. **शिक्षण विधियों का प्रयोग –** एक अच्छा अध्यापक में यह गुण होना भी आवश्यक है कि छात्र उसकी बात का अच्छी तरे से समझ सके इसके लिए उसे छात्रो के स्तर अनुसार एवं विषय की प्रकृति अनुसार उचित शिक्षण विधि का प्रयोग करना चाहिए।

4. **सहायक सामग्री का प्रयोग –** वर्तमान समय में विषय वस्तु की जटिलता कि समाप्ति की दृष्टि से अध्यापन में शिक्षा

तकनीकी के साधनों का प्रयोग किया जाने लगा है एक अच्छा अध्यापक वही है जो छात्रों के स्तर उनकी योग्यता एवं क्षमता तथा विषय–वस्तु की प्रकृति को ध्यान में रखकर वस्तु को सरल और रुचिकर बनाने की दृष्टि से समुचित शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करें।

5. **मनोविज्ञान का ज्ञान –** एक कक्षा में अलग–अलग प्रकार के बालक होते हैं उनकी भिन्न समस्या होती है वह अधिगम भली–भाँति कर सके इसके लिए उनकी समस्याओं का समाधान होना आवश्यक है। एक शिक्षक उसी स्थिति में बालको की समस्याओं का समाधान कर सकता है जब वह उन से परिचित हो और समस्याओं के संबंध में जानने के लिए शिक्षक को मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है।

6. **ज्ञान पिपासा –** एक अच्छा शिक्षक वही है जिसमें हमेशा सीखने की ललक बनी रहती है दूसरे शब्दों मे हम कह सकते है दूसरे शब्दों मे हम कह सकते हैं कि एक अच्छा अध्यापक वही है जो हमेशा विद्यार्थी बना रहता है इससे अध्यापक का खुद का ज्ञान तो बढ़ता ही है साथ ही वह अपने विद्यार्थियों को भी लाभ दे सकता है।

7. **पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रुचि –** एक अच्छे अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह विद्यालय में विभिन्न पाठय सहगामी क्रियाओं का आयोजन करने एवं उन्हें सफलतापूर्वक संपन्न कराने में रुचि ले। साथ ही इसके लिए उसे अपने विद्यार्थियों में रुचि विकसित करने के लिए प्रयत्न करने चाहिए।

8. **समय का पाबंद –** अच्छे अध्यापक का एक महत्वपूर्ण गुण उसका समय के प्रति पाबंद होना है। वह समय पर विद्यालय में जाएं, प्रार्थना सभा में उपस्थित हो तथा कालांश प्रारंभ होते ही कक्षा में जाएं और कालांश समाप्ति के पूर्व क्लास छोड़े अध्यापक यदि समय का पाबंद नहीं है तो उसके विद्यार्थी भी समय के पाबंद नहीं हो सकते।

9. **कुशल वक्ता –** एक शिक्षक को अपनी बात को छात्रों तक पहुंचाने के लिए रुचिपूर्ण, अच्छे स्तर तथा निश्चित अर्थ वाले शब्द का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही प्रवाह पूर्ण तरीके से बोलने में उसे झिझकना नहीं चाहिए। अत्यधिक गति से भी नहीं बोलना चाहिए। दूसरे शब्दों में उसे अपनी बात इस प्रकार के रखनी चाहिए कि विद्यार्थियों पर उसक प्रभाव पड़े और वे उसे सुनने में चाहिए।

10. **छात्रों के प्रति प्रेम व सहानुभूति –** एक शिक्षक केवल अध्यापक के प्रति रुचि रखें यह पर्याप्त नहीं है। उसे अपने विद्यार्थियों में भी रुचि रखनी चाहिए। साथ ही विद्यार्थियों से प्रेम, सहानुभूति, पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। विद्यार्थियों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का संतोषजनक रूप से उत्तर देना चाहिए।

III. व्यक्तित्व संबंधी गुण

एक अच्छे टीचर की पर्सनैलिटी भी प्रभावशाली होना आवश्यक है टीचर का व्यक्तित्व प्रभावशाली तब ही हो सकता है जब उसमें निम्न गुण हो–

1. वेशभूषा – टीचर का व्यक्तित्व प्रभावशाली होने के लिए उसका बाहरी स्वरूप अध्यापक के सम्मान ही होना आवश्यक है।

अध्यापक के समान बाहरी सवरूप होने का अर्थ उसके सुंदर या असुंदर होने से न होकर उस की वेशभूषा आदि से है। अध्यापक को साफ सुथरी प्रेस किये हुए तथा उचित कपड़े पहने चाहिए। बालों को ढंग से सँवारकर कक्षा में जाना चाहिए। इससे शिक्षार्थी के ऊपर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

2- अच्छा स्वास्थ्य Good health -

एक अच्छे अध्यापक का शरीरिक रूप से स्वस्थ होना भी आवश्यक है। यदि शिक्षक स्वस्थ नहीं होगा तो वह कक्षा में क्या पढ़ाएगा वह किस रूप से पढायेगा। शारीरिक रू॰ से अस्वस्थ होने पर मानसिक रूप से भी अस्वस्थ रहेगा और साइकोलॉजिस्ट के द्वारा कहा गया है कि ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है'' शिक्षक का शारीरिक एवं मानसिक रूप होना आवश्यक है।

3. **उच्च शक्ति High quality** .

एक शिक्षक का चारित्रिक रूप से दृढ़ होना चाहिए। क्योंकि शिक्षक के चरित्र का प्रभाव उसके विद्यार्थियों पर शीघ्र ही पड़ता है। अतः अध्यापक को अपने विद्यार्थियों के समक्ष अपने आपको अच्छे रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। कभी भी उनके सामने कोई गलत या अनैतिक हरकत नहीं करनी चाहिए।

4. **नेतृत्व शक्ति Leadership power -**

एक अच्छे शिक्षक में नेतृत्व शक्ति भी होनी चाहिए। उसे अपने विद्यार्थियों को प्रत्येक क्षेत्र, शिक्षक अधिगम, पाठय सहगामी प्रक्रिया, किसी विषय में विचार–विमर्श अनुशासन बनाए रखने आदि में कुशल एवं प्रभावशाली नेतृत्व प्रदान करना चाहिए। जिससे विद्यार्थी इन सभी क्षेत्रों में सफलता पूर्वक कार्य कर सकें।

5. धैर्य**वान Patient** –

एक अच्छे शिक्षक में धैर्य का गुण होना आवश्यक है। छात्रों के प्रश्न पूछने पर उसे उखड़ना नही चाहिए। बात–बात में झुंझलाना नहीं चाहिए। बल्कि धैर्य के साथ सोच समझकर उनके प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट करना चाहिए।

6. **विनोदप्रिय Comedy -**

विनोद प्रिय का तात्पर्य हंसी–मजाक करने वाले व्यक्ति से होता है। यदि कोई शिक्षक अपना चेहरा गुस्से से लाल रखता है तो विद्यार्थी उस अध्यापक से अप्रसन्न रहते हैं। उससे प्रश्न पूछना वह बात करना पसंद नहीं करते हैं अतः अध्यापक को विद्यार्थियों से प्रेम पूर्व मधुर संबंध बनाने एवं कक्षा शिक्षण में रस और रूचि उत्पन्न करने के लिए विनोद प्रिय होना आवश्यक है।

7. उत्साह Excitement -

प्रभावशाली अध्यापक उत्साह ही होता है जो भी कार्य उसे दिया जाता है वह पूर्ण उत्साह के साथ उसे करता है इससे छात्रों में भी रूचि उत्पन्न होती है और वह भी अध्यापक का पूर्ण उत्साह के साथ सहयोग करते हैं जिससे कार्य में पूर्ण सफलता मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

IV. संबंध स्थापित करने का गुण & Relationship Properties

एक अच्छा अध्यापक वह है जो हमें लोगों के साथ अच्छा संबंध रखता है और उन्हें बनाए रखता है एक अच्छे शिक्षक का निम्नलिखित व्यक्तियों से अच्छे संबंध होने चाहिए –

1. **विद्यार्थियों के साथ संबंध** – अध्यापक का कार्य सिर्फ इतना ही नहीं है कि वह कक्षा में जाकर अपना पाठ पढ़ा दे। उसे

2. यह भी देखना चाहिए कि छात्रों पर उसका कितना प्रभाव पड़ता है। वह इस बात को तब ही देख सकता है जब उसका विद्यार्थियों के साथ मधुर संबंध स्थापित हो। इसके लिए उसे प्रत्येक छात्र की और व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना चाहिए। उनकी समस्याओं का उचित समाधान करना चाहिए ।
3. **साथी अध्यापकों के साथ संबंध** – अध्यापक को अपने साथी अध्यापकों के साथ मैं भी मधुर संबंध बनाने चाहिए। अच्छा शिक्षक वही है जो अपने साथी अध्यापक के साथ प्रेम और सहायोग का व्यवहार करें। उनके विचारों का आदर कर, उनकी नींद न करें।
4. **प्रधानाध्यापक के साथ संबंध** – एक अच्छा टीचर वही है जो प्रधानध्यापक की साथ सहयोग पूर्ण व्यवहार करता है। विद्यालय में चलने वाली विभिन्न क्रियाओं को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में अपना योगदान करता है।
5. **अभिभावकों के साथ संबंध** – एक अच्छा टीचर वह है जो छात्रों के साथ–साथ उनके माता–पिता से भी मधुर संबंध बनाता है। इसके लिए उसके विद्यार्थियों को माता–पिता को समय–समय पर बालक की प्रगति से परिचित कराते चाहिए। बल्कि समस्याओं के समाधान के लिए विचार विमर्श करना चाहिए, अध्यापक को शिक्षक अभिभावक संघ बनाने में अधिकाधिक रूचि लेनी चाहिए।

निष्कर्षः– शिक्षक राष्ट्र निर्माता तथा छात्रों के जीवन के भाग्य विधाता है अतः उन्हें अपने कार्यों में विशेष आस्था होनी चाहिए तथा शिक्षण कार्य को व्यवसायिक कार्य न समझकर सामाजिक सेवा एवं आध्यात्मिक कार्य समझना चाहिए। शिक्षक को प्रधानाध्यापक के निर्देशन में शिक्षण कार्य ठीक तरह से करना चाहिए। उसे अपने आदर्श व्यक्तित्व, उत्तम चरित्र तथा व्यवहार पर सम्यक ध्यान रखना चाहिए क्योकि इसका प्रभाव विद्यालय के समस्त क्रियाकलापों और छात्रों के चरित्रों के विकास तथा व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है। उसे छात्रों के साथ पूरी सहानुभूति रखनी चाहिए। और उनकी कठिनाइयों को दूर करने में सहायता पहुँचानी चाहिए। विद्यालय जीवन में शिक्षक को अति महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शिक्षको को विद्यालय जीवन में ही नहीं सम्पूर्ण समाज में अति महत्वपूर्ण एवं सम्मानप्रद स्थान प्राप्त हैं। वह बच्चों के भविष्य का निर्माता होता है। हैं।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता, एस.पी. व बाजपेई पी.के. (2008). शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, मार्डन पब्लिकेशन, जालंधर।
2. नन्दा, पी0 एण्ड पान्नू, जी0 (2005) : इमोशनल स्टेबिलिटी एण्ड सोसियो–पर्सनल फैक्टर्स; इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजूकेशन।
3. नाघवी, फतनेह एवं रेडजौन, मारूफ (2011). द रिलेशनशिप बिटविन जेण्डर एण्ड इमोशनल इंटेलिजेन्स. वर्ल्ड एप्लाइड साइंसेन्स जर्नल. 15(4). 555–561
4. नेहरा, सुमन (2014). रिलेशनशिप बिटविन ऐडजस्टमेन्ट एण्ड इमोशनल मैचुरिटी ऑफ प क्लास स्टूडेन्ट्स, एजुकेशनिया कनफैब, 3(2), पृ0 67–75
5. पाण्डे, के.पी. (2005). फंडामेन्टल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. शर्मा, ए0 एवं अग्रवाल, बी0एल0 (2002) सोसियोमेट्री : ए हैण्डबुक फॉर टीचर्स एण्ड काउंसेलर्स, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।